बहू की विदा - विनोद रस्तोगी

पाठ की रुपरेखा एवं विधा

बहू की विदा दहेज प्रथा रूपी कुरीति पर चोट करती रचना है।इसमें जीवनलाल नामक एक व्यक्ति पाँच हज़ार रूपए दहेज के लिए अपनी बहू के पहले सावन पर मायके विदा नहीं करते।कहते हैं इन पाँच हज़ार रूपयों की फाँस उन्हें रमेश की शादी के दिन से ही लग गई थी।इधर जब उनकी खुद की बेटी की विदाई भी रूपयों के कारण नहीं होती,तब जाकर उनकी नींद खुलती है और अपनी गलती का एहसास होता है।

यह एकांकी विधा की रचना है।